॥ श्रीहरिः ॥

बालकोंको सीख

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ-संख्या
१-कृतज्ञ रहो	....	....	५
२-प्रतिज्ञा करो	....	....	७
३-आदर	....	....	८
४-प्रणाम करो	....	....	११
५-आज्ञा-पालन	....	....	१४
६-स्वागत-सत्कार	....	....	१७
७-व्यवहार	....	....	१९
८-धक्का-मुक्की	....	....	२१
९-मत करो	....	....	२४
१०-गंदी आदतें	....	....	२६
११-घमंड मत करो	....	....	२८
१२-काम करनेमें लजाओ मत	....	....	३०
१३-भूल जाओ	....	....	३२

॥ श्रीहरिः ॥

बालकोंको सीख

(१)

कृतज्ञ रहो

जिस भगवान्‌ने तुम्हें मनुष्य बनाया, उस भगवान्‌के प्रति कृतज्ञ रहो।

जिस भगवान्‌ने तुम्हारे लिये फल, अन्न और जल बनाया, उस भगवान्‌के प्रति कृतज्ञ रहो।

जिस भगवान्‌ने तुम्हें सुखकी सब वस्तुएँ दीं, उस भगवान्‌के प्रति कृतज्ञ रहो।

जिस देशमें तुम्हारा जन्म हुआ,
उस देशके प्रति कृतज्ञ रहो।
जिस देशमें तुम्हारा पालन हुआ,
उस देशके प्रति कृतज्ञ रहो।
जिस देशमें तुम बढ़े—सुखी हुए,
उस देशके प्रति कृतज्ञ रहो।

जिन माता-पिताने तुम्हें जन्म दिया,
उन माता-पिताके प्रति कृतज्ञ रहो।
जिन माता-पिताने तुम्हारा पालन किया,
उन माता-पिताके प्रति कृतज्ञ रहो।
जिन माता-पिताने तुम्हें प्यार किया,
उन माता-पिताके प्रति कृतज्ञ रहो।
जिन शिक्षकोंने तुम्हें विद्या दी,
उन शिक्षकोंके प्रति कृतज्ञ रहो।
जिन मित्रोंने तुमसे मित्रता की,
उन मित्रोंके प्रति कृतज्ञ रहो।
जिन भाई-बहिनोंने तुम्हें अपना माना,
उन भाई-बहिनोंके प्रति कृतज्ञ रहो।

(२)

प्रतिज्ञा करो

दयामय भगवान्‌को कभी नहीं भूलेंगे।
जन्मदात्री माताको कभी नहीं भूलेंगे।
अपने स्नेहमय पिताको कभी नहीं भूलेंगे।
अपने देशको कभी नहीं भूलेंगे।

भगवान्‌को सदा सर्वत्र स्मरण रखेंगे।
अपने देशके गौरवकी रक्षा करेंगे।
अपनी माताके गौरवकी रक्षा करेंगे।
अपने पिताके गौरवकी रक्षा करेंगे।
अपनी जातिके गौरवकी रक्षा करेंगे।

हम भगवान्‌की संतान हैं।
हम भारतकी संतान हैं।
हम गौरवशाली माता-पिताकी संतान हैं।

हम अपने गौरवकी रक्षा करेंगे।
हम अपनी मर्यादाकी रक्षा करेंगे।
हम सदा देश और भगवान्‌के कृतज्ञ रहेंगे।

(३)

आदर

तुम अपने देशका आदर करते हो—
तुम देशके सुपुत्र हो।
तुम अपनी जातिका आदर करते हो—
तुम जातिके सुपुत्र हो।
तुम अपने धर्मका आदर करते हो—
तुम धर्मके सुपुत्र हो।
तुम माता-पिताका आदर करते हो—
तुम माता-पिताके सुपुत्र हो।
जो अपने देशका आदर न करे,
वह पशुके समान है।
जो अपनी जातिका आदर न करे,
वह पशुके समान है।
जो अपने माता-पिताका आदर न करे,
वह पशुके समान है।
जो अपनेसे बड़ोंका आदर न करे,
वह पशुके समान है।

देशका आदर कैसे करोगे ?

देशके हितका काम करके।

जातिका आदर कैसे करोगे ?

जातिके हितका काम करके।

धर्मका आदर कैसे करोगे ?

धर्मको पालन करके।

माता-पिताका आदर कैसे करोगे ?

माता-पिताकी सेवा करके।

बड़ोंका आदर कैसे करोगे ?

बड़ोंकी आज्ञाका पालन करके।

देशका आदर करोगे—गौरव मिलेगा।

जातिका आदर करोगे—सम्मान मिलेगा।

धर्मका आदर करोगे—परलोक बनेगा।

माताका आदर करनेसे आयु बढ़ती है।

पिताका आदर करनेसे यश बढ़ता है।

विद्वानोंका आदर करनेसे विद्या बढ़ती है।

बड़ोंका आदर करनेसे आयु,
कीर्ति और लक्ष्मी तीनों बढ़ती हैं।

बड़े-बूढ़ोंका आदर करो।
साधु-संतोंका आदर करो।
आये अतिथिका आदर करो।
सभी बड़ोंका आदर करो।

गो-माताका आदर करो।
तुलसीजीका आदर करो।
देव-मन्दिरका आदर करो।
देव-मूर्तिका आदर करो।
पूज्य ग्रन्थोंका आदर करो।
अपनी पुस्तकोंका आदर करो।

(४)

प्रणाम करो

सबेरे जागते ही भगवान्‌को प्रणाम करो।
नित्य सोते समय भगवान्‌को प्रणाम करो।
देव-मन्दिरमें भगवान्‌को प्रणाम करो।
कथा-कीर्तनमें भगवान्‌को प्रणाम करो।
सबेरे उठते ही पृथ्वी-माताको प्रणाम करो।
सबेरे उठकर गो-माताको प्रणाम करो।
सबेरे उठकर तुलसीजीको प्रणाम करो।
रोज सबेरे माताजीको प्रणाम करो।
रोज सबेरे पिताजीको प्रणाम करो।
रोज सबेरे बड़े भाईको प्रणाम करो।
रोज सबेरे सब बड़े लोगोंको प्रणाम करो।

पाठशालामें शिक्षकोंको प्रणाम करो।
घर आये अभ्यागतको प्रणाम करो।
कहीं तुमसे कोई बड़े मिलें तो प्रणाम करो।

हाथ जोड़कर प्रणाम करो।
सिर झुकाकर प्रणाम करो।
नम्रतासे प्रणाम करो।

जो नित्य बड़ोंको प्रणाम करता है—
उसकी आयु बढ़ती है।
जो नित्य बड़ोंको प्रणाम करता है—
उसकी विद्या बढ़ती है।
जो नित्य बड़ोंको प्रणाम करता है—
उसका यश बढ़ता है।
जो नित्य बड़ोंको प्रणाम करता है—
उसका बल बढ़ता है।

नित्य सबेरे भगवान्‌को प्रणाम करते हो या नहीं ?
नित्य सबेरे धरती माताको प्रणाम करते हो या नहीं ?
नित्य सबेरे तुलसीजीको प्रणाम करते हो या नहीं ?
नित्य सबेरे गोमाताको प्रणाम करते हो या नहीं ?
नित्य माताजीको प्रणाम करते हो ?
नित्य पिताजीको प्रणाम करते हो ?

नित्य बड़े भाईको प्रणाम करते हो ?
नित्य सभी बड़ोंको प्रणाम करते हो ?

शिक्षकके पास जानेपर
प्रणाम करना मत भूलो।
अतिथिसे मिलनेपर प्रणाम
करना मत भूलो।

किसी गुरुजनसे मिलनेपर प्रणाम करना मत भूलो।
किसी परिचितसे मिलनेपर प्रणाम करना मत भूलो।

(५)

आज्ञा-पालन

माताजी तुमसे कुछ करनेको कहती हैं
तो क्या करते हो ?
पिताजी तुमसे कुछ करनेको कहते हैं
तो क्या करते हो ?
बड़े भाई तुमसे कुछ करनेको कहते हैं
तो क्या करते हो ?
घरके बड़े लोग तुमसे कुछ करनेको कहते
हैं तो क्या करते हो ?
तुम्हारे अध्यापक तुमसे कुछ करनेको
कहते हैं तो क्या करते हो ?

रामप्रसाद माताकी बात मानता है—
रामप्रसाद अच्छा लड़का है।
रामप्रसाद पिताकी बात मानता है—
रामप्रसाद अच्छा लड़का है।
रामप्रसाद बड़े भाईकी बात मानता है—
रामप्रसाद अच्छा लड़का है।

रामप्रसाद सभी बड़ोंकी बात मानता है—
रामप्रसाद अच्छा लड़का है।
रामप्रसाद अध्यापककी बात मानता है—
रामप्रसाद अच्छा लड़का है।
जो माताकी आज्ञा न माने—वह लड़का बुरा है।
जो पिताकी आज्ञा न माने—वह लड़का बुरा है।
जो भाईकी आज्ञा न माने—वह लड़का बुरा है।
जो बड़ोंकी आज्ञा न माने—वह लड़का बुरा है।
जो अध्यापककी आज्ञा न माने—
वह लड़का बुरा है।
तुम बुरे लड़के मत बनना।
तुम बड़ोंके अपराधी मत बनना।
तुम अच्छे लड़के बनना।
तुम आज्ञाकारी बनना।
माताजी कुछ कहें—कहो 'जी हाँ।'
उनकी आज्ञाका पालन करो।
पिताजी कुछ कहें—कहो 'जी हाँ।'
उनकी आज्ञाका पालन करो।
बड़े भाई कुछ कहें—कहो 'जी हाँ।'
उनकी आज्ञाका पालन करो।
बड़े लोग कुछ कहें—कहों 'जी हाँ।'

उनकी आज्ञाका पालन करो।

अध्यापक कुछ कहें—कहो 'जी हाँ।'

उनकी आज्ञाका पालन करो।

(६)

स्वागत-सत्कार

तुम्हारे घर कोई आता है तो क्या करते हो ?
छिपकर घरमें चले जाते हो ?
अपनी माता या पिताके पास चले जाते हो ?
वह कुछ पूछता है तो मुँह छिपा लेते हो ?
वह कुछ पूछता है तो सिर हिलाते हो ?
ऐसा व्यवहार अच्छा नहीं।
ऐसा संकोच अच्छा नहीं।
ऐसी लज्जा अच्छी नहीं।

घरमें सम्बन्धी लोग आते हैं।
घरमें अभ्यागत आते हैं।
घरमें बड़े लोग आते हैं।
घरमें तुम्हारे मित्र आते हैं।
तुम उनका स्वागत करो।
तुम उनको प्रणाम करो।
तुम उनको बैठनेको कुर्सी दो।
तुम उनको बैठनेको आसन दो।
तुम उन्हें बैठनेको कहो।

तुम उन्हें पीनेके लिये जल दो।
तुम उन्हें इलायची-सुपारी दो।
वे कुछ पूछें तो नम्रतासे उत्तर दो।

घर आये सम्बन्धी,
घर आये अभ्यागत,
घर आये बड़े लोग,
घर आये मित्र,

जब घरसे जाने लगते हैं—
तुम उनके साथ उठ खड़े हो।
तुम उन्हें थोड़ी दूर पहुँचाने जाओ।
तुम उन्हें प्रणाम करो।

जो तुम्हारे घर आयें, उनका स्वागत करो।
जो तुम्हारे घर आयें, उनको प्रणाम करो।
जो तुम्हारे घर आयें, उन्हें बैठनेको आसन दो।
जो तुम्हारे घर आयें, उन्हें पानी पिलाओ।
जो तुम्हारे घर आयें, उन्हें पान-इलायची दो।
जो तुम्हारे घर आयें, उनसे प्रेमसे बोलो।
जो तुम्हारे घर आयें, उनको जाते समय पहुँचाओ।

(७)

व्यवहार

किसीसे बोलो—प्रेमसे बोलो।
किसीसे बोलो—सत्य बोलो।
किसीसे बोलो—सभ्यतासे बोलो।

किसीसे मिलो, नम्रतासे बोलो।
किसीसे मिलो, प्रेमसे मिलो।
किसीसे मिलो, आदरसे मिलो।

किसीसे कुछ लेना हो, सरलतासे माँगो।
किसीसे कुछ लेना हो, सचाईसे माँगो।
किसीसे कुछ लेना हो, सिधाईसे माँगो।

किसीको कुछ देना हो, समयपर दो।
किसीको कुछ देना हो, उदारतासे दो।
किसीको कुछ देना हो, ईमानदारीसे दो।

व्यवहारमें सरलता रखो।
व्यवहारमें सचाई रखो।
व्यवहारमें ईमानदारी रखो।
व्यवहारमें उदारता रखो।

तुम कैसा व्यवहार पसंद करोगे ?
उदार व्यवहार।
तुम कैसा व्यवहार पसंद करोगे ?
दयापूर्ण व्यवहार।
तुम कैसा व्यवहार पसंद करोगे ?
ईमानदारीका व्यवहार।
तुम कैसा व्यवहार पसंद करोगे ?
सचाईका व्यवहार।

सच्चे बनो। सच्चा व्यवहार करो।
सरल बनो। सरलताका व्यवहार करो।
उदार बनो। उदारताका व्यवहार करो।
दयालु बनो। दयापूर्ण व्यवहार करो।
ईमानदार बनो। ईमानदारीका व्यवहार करो।

धक्का-मुक्की

रेलका टिकट लेने
जाओ— धक्का-मुक्की।
रेलमें चढ़ने जाओ—
धक्का-मुक्की।
रेलसे उतरने लगो—धक्का-मुक्की।
धक्का-मुक्कीमें चोट लगे।
धक्का-मुक्कीमें कपड़े फटें।
धक्का-मुक्कीमें सामान खोयें।
धक्का-मुक्की अच्छी नहीं।
धक्का-मुक्की नहीं करना।
धक्का-मुक्की बंद करो।
एक पंक्तिमें खड़े हो।
बारी-बारीसे काम करो।
सबको आराम होगा।
सबका जल्दी काम होगा।

नावपर चढ़ते धक्का-
मुक्की।

मोटरमें चढ़ते धक्का-
मुक्की।

मन्दिरमें जाते धक्का-मुक्की।
बाजारके भीतर धक्का-मुक्की।

धक्का-मुक्कीमें चोट लगे।
धक्का-मुक्कीमें कपड़े फटें।
धक्का-मुक्कीमें सामान खोयें।

धक्का-मुक्की अच्छी नहीं।
धक्का-मुक्की नहीं करना।
धक्का-मुक्की बंद करो।

एक पंक्तिमें खड़े हो।
बारी-बारीसे काम करो।
सबको आराम होगा।
सबका झटपट काम होगा।

मेलेमें घूमते धक्का-मुक्की।
सौदा लेते धक्का-मुक्की।
सभा-सोसायटीमें धक्का-मुक्की।
कथा-कीर्तनमें धक्का-मुक्की।

धक्का-मुक्कीमें चोट लगे।
धक्का-मुक्कीमें कपड़े फटें।
धक्का-मुक्कीमें सामान खोयें।

धक्का-मुक्की अच्छी नहीं।
धक्का-मुक्की नहीं करना।
धक्का-मुक्की बंद करो।

एक पंक्तिमें खड़े हो।
बारी-बारीसे काम करो।
सबको आराम होगा।
सबका झटपट काम होगा।

(९)

मत करो

आलस मत करो। असावधानी मत करो।
किसीकी निन्दा मत करो। किसीसे घृणा मत करो।
किसीकी चुगली मत करो। किसीसे ईर्षा मत करो।
किसीसे निर्दयता मत करो। किसीको धोखा मत दो।

आलस करे, वह आलसी कहलाता है।
आलसीका कोई काम ठीक नहीं होता।
आलसी रोगी रहता है।
आलसी दरिद्र रहता है।

असावधानी करनेसे कोई काम ठीक नहीं होता।
असावधानी करनेसे लोग धिक्कारते हैं।
असावधानी करनेसे सदा हानि होती है।

तुम किसीकी निन्दा करोगे,
वह तुम्हारी निन्दा करेगा।
तुम किसीसे घृणा करोगे,
वह तुमसे घृणा करेगा।

तुम किसीकी चुगली करोगे,
वह तुम्हारी चुगली करेगा।
तुम किसीसे ईर्षा करोगे,
वह तुमसे ईर्षा करेगा।

जो औरोंसे निर्दयता करता है,
उसपर संकटमें लोग दया नहीं करते।
जो किसीको धोखा देता है,
वह स्वयं भी धोखा खाता है।

निन्दा, चुगली, घृणा, ईर्षा,
निर्दयता, धोखा देना—
ये चित्तके मैल हैं।
इनसे चित्त मैला होता है।

तुम अपना चित्त मैला मत बनाओ।
तुम अपना चित्त गन्दा मत करो।
किसीकी बुराई मत करो।
किसीपर क्रोध मत करो।

(१०)

गन्दी आदतें

कुछ लड़के मुखमें तिनका डालकर नोचते हैं।
कुछ लड़के मुखमें पत्ते डालकर नोचते हैं।
कुछ लड़के मुखमें अँगुली डालते हैं।
कुछ लड़के मुखमें कपड़ा डालते हैं।
कुछ लड़के दाँतोंसे नख काटते हैं।

ऐसे लड़के गन्दे समझे जाते हैं।
ऐसे लड़के असभ्य समझे जाते हैं।
ऐसे लड़के अच्छे नहीं माने जाते हैं।

मुखमें तिनका डालना गन्दी आदत है।
मुखसे पत्ते नोचना गन्दी आदत है।
मुखमें अँगुली डालते रहना गन्दी आदत है।
मुखमें कपड़ा डालना गन्दी आदत है।
दाँतसे नख काटना गन्दी आदत है।

मुखमें तिनके मत डाला करो।
मुखसे पत्ते मत नोचा करो।
मुखमें अँगुली मत डाला करो।
मुखमें कपड़ा-कागज मत डाला करो।

दाँतसे नख मत काटा करो।
गन्दी आदत मत डालो।
गन्दी आदत छोड़ दो।
गन्दी आदतसे दूर रहो।

(११)

घमंड मत करो

तुम धनवान घरके हो, इसका तुम्हें घमंड है।
तुम बलवान हो, इसका तुम्हें घमंड है।
तुम बुद्धिमान हो, इसका तुम्हें घमंड है।
तुम सुन्दर हो, इसका तुम्हें घमंड है।

घमंडीका सिर नीचा।
घमंडीकी दुर्गति होती है।
घमंडीसे सब घृणा करते हैं।
घमंड करना छोड़ दो।

धन, पता नहीं, कब नष्ट हो जाय।
बल, पता नहीं, कब नष्ट हो जाय।
बुद्धि, पता नहीं, कब नष्ट हो जाय।
सुन्दरता, पता नहीं, कब नष्ट हो जाय।

घमंडमें आकर किसीको मत सताओ।
घमंडमें आकर किसीका अपमान मत करो।
घमंडमें आकर किसीको तुच्छ मत समझो।

धनका फल है दान।
बलका फल है दया।
बुद्धिका फल है उपकार।
सुन्दरताका फल है संयम।

धन है तो दान करो, नम्र रहो।
बल है तो दया करो, नम्र रहो।
बुद्धि है तो उपकार करो, नम्र रहो।
सुन्दरता है तो संयत रहो, नम्र रहो।

किसी बातका घमंड मत करो।
किसी समय घमंड मत करो।
किसीसे भी घमंड मत करो।

(१२)

काम करनेमें लजाओ मत

अपने कपड़े धोनेमें तुम्हें
लज्जा आती है ?
अपने बर्तन मलनेमें तुम्हें
लज्जा आती है ?
अपने घरके लिये पानी
भरनेमें तुम्हें लज्जा आती है ?
अपना कमरा झाड़नेमें तुम्हें
लज्जा आती है ?
स्टेशनसे अपना बिस्तर उठा लाते
तुम्हें लज्जा आती है ?
बाजारसे अपना सामान ले आते
तुम्हें लज्जा आती है ?
कहीं भी अपना काम करते तुम्हें लज्जा आती है ?
ऐसी लज्जा अच्छी नहीं।
ऐसा संकोच अच्छा नहीं।
ऐसा स्वभाव अच्छा नहीं।

अच्छे पुरुष अपना काम करते संकोच नहीं करते।
बड़े लोग अपना काम करते संकोच नहीं करते।
समझदार लोग अपना काम करते संकोच नहीं करते।

अपने कपड़े धोनेमें लज्जा कैसी।
अपने बर्तन मलनेमें लज्जा कैसी।
अपने घरका पानी भरनेमें लज्जा कैसी।
अपना कमरा झाड़नेमें लज्जा कैसी।

अपना बिस्तर उठा लानेमें लज्जा-
का क्या काम।
अपना सामान ले आनेमें लज्जा-
का क्या काम।
अपना काम अपने हाथसे करनेमें लज्जा-
का क्या काम।

अपना काम करनेमें हिचको मत, झिझको मत।
अपना काम करनेमें सकुचाओ मत, लजाओ मत।

(१३)

भूल जाओ

किसीने तुम्हें कभी गाली दी है, इसे भूल जाओ।
किसीने कभी तुमसे झगड़ा किया है, इसे भूल जाओ।
किसीने तुम्हारी कोई हानि की है, इसे भूल जाओ।
किसीके दोष कभी दीखे हों तो भूल जाओ।
किसीका अपराध मनमें मत रखो, भूल जाओ।
किसीसे कोई चूक हो गयी हो तो भूल जाओ।

किसीने तुम्हारा अपमान किया,
उसे तुम याद रखोगे तो दुखी रहोगे।
किसीने तुम्हारी हानि की,
उसे तुम याद रखोगे तो दुखी रहोगे।
किसीने तुम्हें गाली दी,
उसे तुम याद रखोगे तो दुखी रहोगे।

भूल जाओ—दूसरोंके द्वारा हुआ अपराध।
भूल जाओ—दूसरोंके द्वारा हुई हानि।
भूल जाओ—दूसरोंके दोष।